जनसंख्या स्थिरीकरण

डॉ0 धीरेन्द्र कुमार*

जीवविज्ञान के आधार पर एक या आपस में सम्बंधित अनेक जाति के जीवों के एक विशेष क्षेत्र में उपस्थिति समूह को जनसंख्या कहते हैं। यह एक स्व–नियंत्रित तंत्र हैं। मानव हर प्रकार की जलवायु एवं भौगोलिक क्षेत्रों में मिलता है तथा इसमें पूरे वर्ष प्रजनन क्षमता होती है। पृथ्वी के विभिन्न भागों में भिन्न प्रकार की सामाजिक व सांस्कृतिक गतिविधियाँ होने पर भी समस्त मानव जाति में कुछ मूलभूत लक्षण समान होते है। प्रारम्भ में जनसंख्या सम्बंधी अध्ययन केवल जनगणना तक सीमित थे किंतु आधुनिक समय में जनसंख्या का गणितीय विश्लेषण किया जाने लगा है जिसे एक विषय का रूप दे दिया गया है और जनांकिकी की संज्ञा दी गयी है। यह ग्रीक भाषा के दे शब्दों डेमो (जनता) तथा ग्राफी (लिखना) से मिलकर बना है जिसका अर्थ है जनता के विषय में लिखना इसके अन्तर्गत जनसंख्या की अवधारणा, सिद्धान्त और पद्धति को समझने के साथ–साथ जनसंख्या वृद्धि के कारणों एवं परिणामों तथा जनसंख्या से जुड़े अन्य पहलुओं जैसे–स्वास्थय एवं बीमारियों, यौन शिक्षा, पर्यावरण, सामाजिक–आर्थिक विकास, स्त्रियों की स्थिती, गरीबी और जीवन की गुणवत्ता आदि के प्रति भी एक तर्कपूर्ण वैज्ञानिक दृष्टि कोण प्रस्तुत करती हैं।

जनांकिकी के अन्तर्गत जनसंख्या वृद्धि के कई सिद्धान्त भी दिए गए हैं। इनमें माल्थस का एवं जनसंख्या वृद्धि का संक्रमण सिद्धांत काफी लोकप्रिय हुए। टी. आर. माल्थस ने जनसंख्या के विषय में अपने सिद्धांत में कहा है कि जनसंख्या ज्यामितीय अनुपात में बढ़ती है जबकि खाद्यान्न की मात्रा गणितीय अनुपात में बढ़ती है जबकि खाद्यान्न की मात्रा गणितीय अनुपात में बढ़ती है। जनसंख्या वृद्धि का अनिवार्य रूप से विकास पर प्रभाव माल्थस के बाद ही पड़ना शुरू हुआ। अंततः जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत का प्रादुर्भाव हुआ। जिसका आर्थिक विकास से एकदम निकट का सम्बंध सैद्धांतिक एवं प्रयोगात्मक दोनों ही धरातलों पर सिद्ध हो गया।

संक्रमण सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक अर्थव्यवस्था को जनसंख्या वृद्धि की चार अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। प्रथम अवस्था स्थिरता की अवस्था है जिसमें जन्म और मृत्यु दोनों की दरें अधिक होती हैं। अतः जनसंख्या वृद्धि दर एक प्रतिशत प्रतिवर्ष से कम रहती है। इसी अवस्था में ऊंची स्थिर जनसंख्या होती है। इस प्रकार की स्थिति अफ्रीकी एवं एशियाई महाद्वीपों के पिछड़े राष्ट्रों में देखने को मिलती है।

दूसरी अवस्था तीव्र वृद्धि की अवस्था है जिसमें मृत्युदर तो घटती है पर जन्मदर बहुत कम घटती है। ज्यों–ज्यों पिछड़े देष आर्थिक विकास की ओर बढ़ने लगते हैं। वैसे–वैसे वहां लोगों को आधिक सुख–सुविधायें जैसें– अच्छा भोजन और चिकित्सा सुविधायें प्राप्त होने लगती हैं। इन सब कारणों से मृत्यु दर में कमी नहीं आती है। परिणामतः जनसंख्या विस्फोट की स्थिति जन्म ले लेती है।

तीसरी अवस्था में मृत्युदर और भी कम हो जाती है, किंतु साथ ही जन्मदर भी कम होने लगती है। इस अवस्था में संयम तथा कृत्रिम उपायों द्वारा जनसंख्या को नियंत्रित करने का प्रयास किया जाता है। जन्मदर और मृत्युदर में अंतर कम हो जाता है जिससे जनसंख्या विकास धीमा हो जाता है। कुल मिलाकर दूसरी और तीसरी अवस्था में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति देखने को मिलती है।

चौथी अवस्था उस समय देखने में आती है जबकि देश का आर्थिक विकास बहुत अधिक हो जाता है और जीवन स्तर काफी ऊंचाा हो जाता है। इस अवस्था में जन्मदर की अपेक्षा मृत्यु दर ऊंची होती है। आज यूरोप के विकसित राष्ट्रों में यह स्थिति देखने को मिल रही है। लेकिन आजकल विश्व के अधिकांश देश जनसंख्या विस्फोट की समस्या से जूझ रहे हैं। जनसंख्या विस्फोट शब्द का प्रयोग जनसंख्या की अत्यंत तीव्र गति से एकाएक वृद्वि के लिए किया जाता है। हर देश में जब विकास होगा तो जन्मदर की तुलना में मृत्युदर अधिक तीव्रगति से घटेगी और उसका परिणाम यह होगा कि जनसंख्या में वृद्धि होगी। आज पैदा होने वाले बच्चे जिन्हें अकाल शिशु मृत्यु से बचा लिया जायेगा। 20–22 वर्ष बाद स्वयं बच्चे पैदा करेंगे। यही से जनसंख्या विस्फोट की स्थिति का निर्माण होता है।

* कार्यवाहक प्राचार्य (समाजशास्त्र), गॉधी स्मारक महाविद्यालय, सुरजन नगर, मुरादाबाद

शुरू से लेकर 1830 तक विश्व की कुल जनसंख्या केवल एक अरब थी, किंतु अगले 100 वर्षों में ही अर्थात 1930 तक जनसंख्या दोगुनी हो गयी। जनसंख्या वृद्धि की यह गति और तीव्र हुई और अगली एक अरब की वृद्धि केवल 30 वर्षों में ही हो गयी। 1930–70 का सम्पूर्ण काल हम जनसंख्या विस्फोट की प्रथम अवस्था का काल मानते है। इन चार दशकों में विश्व की जनसंख्या 375 करोड़ की सीमा पार कर गयी। 1975 तक जनसंख्या बढ़कर चार अरब हो गयी। विश्व की जनसंख्या में पुनः एक अरब की वृद्धि होने में केवल 12 वर्ष लगे और 11 जुलाई 1987 को विश्व की कुल जनसंख्या 5 अरब के बिन्दु को पार कर गयी। तब से ही 11 जुलाई को प्रतिवर्ष विश्व जनसंख्या दिवस के रूप में मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार नई सहस्त्राब्दि में प्रवेश के साळा ही पूरे विश्व की जनसंख्या 6.5 अरब पहुंच गयी है। इस समय विश्व में प्रतिमिनट लगभग 1.50 बच्चे जन्म ले रहे हैं। विश्व जनसंख्या प्रतिवर्ष 7 करोड़ 80 लाख की दर से बढ़ रही है। इस वृद्धि का 95 प्रतिशत अंश विकासशील देशों के हिस्से में है। सांख्यिकीय दृष्ट्रि से अनुमान लगाने पर पता चला है कि 2015 तक यह 7.29 अरब एवं 2050 तक 9.37 अरब हो जायेगी। इस प्रकार विश्व जनसंख्या निरंतर गुणात्मक रूप से बढ़ रही है।

जहाँ तक भारत की जनसंख्या का संदर्भ है तो यह विगत 50 वर्षों में तीव्र गति से बढ़ी है। वर्ष 1901 में भारत की जनसंख्या 23.84 करोड़ थी जो बढ़कर 1951 में 36.10 करोड़ तथा 2001 की जनगणना के अनुसार एक अरब दो करोड़ सत्तर लाख से ऊपर पहुंच गयी है। 1951 से 2001 के बीच के पांच दशकों में जनसंख्या में भयावह बढ़ोत्तरी हुई। आज विश्व की 16.7 प्रतिशत जनसंख्या भारत में निवास कर रही है, जबकि विश्व की भूमि का मात्र 2.4 प्रतिशत ही भारत के हिस्से में है। 1991 से 2001 के दशक में भारत की जनसंख्या में वृद्धि 21.34 प्रतिशत की हुई। इस दशक में जनसंख्या वृद्धि का आंकड़ा ब्राजील की कुल जनसंख्या के बराबर आंका गया है। जनसंख्या की दृष्टि में उत्तर प्रदेष ने पाकिस्तान की जनसंख्या के आकड़ों को भी पीछे छोड़ दिया है। भारत की वर्तमान जनसंख्या वृद्धि दर 1.93 प्रतिशत वार्षिक है जबकि चीन की वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर 0.95 रह गयी है। भारत की वर्तमान जनसंख्या चीन की जनसंख्या से अब लगभग 24 करोड़ ही कम है। 1991 से 2001 के दशक में भारत की जनसंख्या में निरपेक्ष वृद्धि जहां 18.10 करोड़ की हुई वहीं विश्व के सबसे अधिक जनसंख्या वाले देश चीन में 1999–2000 के दशक में 13.22 करोड़ की वृद्धि हुई है। दोनों राष्ट्रों में जनसंख्या वृद्धि की वर्तमान स्थिति को देखते हुए 2025–50 के मध्य कभी भी भारत की जनसंख्या चीन की जनसंख्या से अधिक हो सकती है। एक सांख्यिकीय अनुमान के अनुसार पूरे भारतवर्ष की जनसंख्या 2021 में 134.5 करोड़ एवं 2025 में 164.6 करोड़ हो जायेगी।

आज भारत के सामने वास्वविकता में सबसे कठिन चुनौती जनसंख्या पर नियंत्रण करने की है। जनसंख्या की समस्या ने आज देश सरकार तथा प्रशासन के समक्ष गंभीर चुनौती प्रस्तुत कर दी है। यह चुनौती इस विशाल जनसंख्या के लिए भोजन, मकान कपड़ा, रोजगार, चिकित्सा, शिक्षा, आदि उपलब्ध कराने की है। जनसंख्या वृद्धि ने सरकार की अनेक विकास योजनाओं को अप्रासंगिक बना दियाा है। यदि कोई योजना वर्तमान में प्रस्तुत की जाती है तो उसके पूरा होने तक जनसंख्या इतनी बढ़ चुकी होती है कि सम्बंधित योजना की प्रासंगिकता पर ही प्रश्नचिन्ह लग जाता है। वर्तमान में सड़क, अस्पताल, विद्यालय, रेलगाड़ियाँ, पेयजल सुविधाएं, विद्युत आपूर्ति जैसी बुनियादी सुविधायें जनसंख्या के दबाव के सामने स्वयं को असहाय महसूस कर रही हैं। जनसंख्या वृद्धि ने देश के आर्थिक विकास पर भी नकारात्मक प्रभाव डाला है। प्रख्यात अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने अपनी पुस्तक द वेल्थ ऑफ नेशन्स में लिखा है कि वास्तव में मनुष्य का प्रयत्न तथा योग्यता ही अंततः समस्त आर्थिक वस्तुओं एवं सेवाओं का स्त्रोत है। देश मे उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों तथा जनसंख्या के मध्य असंतुलन ने अनेक सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं को जन्म दिया है।

तीव्रगति से बढ़ती जनसंख्या ने कृषि पर अत्यधिक दबाव डाला है। फलतः कृषि में नवीन तकनीकी का प्रयोग पूर्णरूप से नहीं हो पा रहा है। साथ ही कृषि भूमि को धीरे–धीरे आवासीय क्षेत्र में परिवर्तित किया जा रहा है जिसके भविष्य में दूरगामी दुष्परणिाम होंगे।

जनसंख्या विस्फोट के कारण अनेक बार देश में खाद्यान्न संकट उत्पन्न हुआ है तथा देशवासियों की खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सरकार ने बहुमूल्य विदेशी मुद्रा खर्च कर खाद्यान्न का आयात किया है। वर्तमान में हमारे देश में खाद्यान्न की विकट समस्या से जूझना पड़ सकता है।

देश की जनसंख्या संरचना तथा आर्थिक विषमता के कारण भी अनेक समस्यायें उत्पन्न हुई है। वर्तमान में देश में 15–45 वर्ष की आयु वर्ग में लगभग 46.5 करोड़ युवक–युवतियाँ हैं जिन्हें देखते हुए निकट भविष्य में जनसंख्या वृद्धि की दर में चमत्कारिक गिरावट की उम्मीद नहीं है। साथ ही इस विशाल जनसंख्या के लिए रोजगार उपलब्ध कराना भी एक चुनौतिपूर्ण कार्य होगा। देश में क्षेत्रवार जनसंख्या संरचना के विषमतापूर्ण होने के कारण रोजगार हेतु प्रवास की स्थिति विद्यमान है जिसके कारण देश के पूर्वी राज्यों–बिहार, उड़ीसा, बंगाल, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ आदि से श्रमिकों का पलायन पश्चिमी तथा उत्तरी राज्यों की ओर होता है।

जनसंख्या में तीव्र वृद्धि ने देश के पर्यावरण पर घातक प्रभाव डाला है। जनसंख्या विस्फोट के कारण बेरोजगारी में बृद्धि होने से लोगों के गाँवों से शहरों की ओर पलायन में वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप गाँवों से शहर दोनों की सामाजिक तथा आर्थिक संरचना में बदलाव आया है तथा दोनों स्थानों पर अनेक समस्यायें उत्पन्न हुई हैं। शहरीकरण के परिणामस्वरूप सभी बड़े तथा औद्योगिक नगरों में मलिन बस्तियाँ बन गयी हैं तथा औद्योगिक शहर एक बड़े स्लम में परिवर्तित होते जा रहे हैं।

जनसंख्या विस्फोट के परिणामस्वरूप लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतू प्राकृतिक संसाधनों, जैसे– जल, वायु, भूमि, खनिज संसाधन आदि के अनियंत्रित तथा अव्यवस्थित उपयोग ने प्राकृतिक संतुलन बिगाड़ दिया है जिसके परिणामस्वरूप प्रकृति, सूखा, बाढ़ असामयिक एवं अनियंत्रित वर्षा, भूकंप, तूफान, चक्रवात, मौसम एवं जलवायु में तीव्र परिवर्तन आदि के माध्यम से अपनी नाराजगी प्रकट कर रही है। इस प्रकार तीव्र जनसंख्या वृद्धि ने मूल प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ दिया है जिसका दुष्परिणाम वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व को भुगतना पड़ रहा है।

इसके साथ–साथ देश में निरंतर वन कटाव ने स्थिति को और भयावह बना दिया है। विगत 40 वर्षों में भारतीय वन क्षेत्र 20 प्रतिशत से घटकर मात्र 8 प्रतिशत रह गया है। साथ ही जल प्रदूषण भी एक गंभीर समस्या बन चुका है। एक सर्वेक्षण के अनुसार देश में उपलब्ध जल का 70 प्रतिशत भाग दूषित हो चुका है जिसमें 30 प्रतिशत जल तो विषाक्त है। देश में प्रदूषित हो रही नदियों के पीछे भी एक प्रमुख कारण बढ़ती जनसंख्या ही है। इस प्रकार पर्यावरण के प्रत्येक क्षेत्र को जनसंख्या विस्फोट ने काफी हद तक प्रभावित किया है।

बढ़ती जनसंख्या इस समय देश की वह गंभीरतम समस्या है जिस पर कम से कम पिछले दो दशकों से लगातार चिंता व्यक्त की जा रही है। जनसंख्या नियंत्रण में विफलता के भावी खतरे गिनाए जा रहे हैं। विभिन्न अभिकरणें द्वारा केंद्र एवं राज्य सरकारों से लगातार यह मांग की जाती रही है कि वे जनसंख्या नियंत्रण की दिशा में ठोस कदम उठाएं। परिवार नियोजन कार्यक्रम के वांछित परिणाम न मिलने और इसके लगभग विफल हो जाने के बाद से जनसंख्या नियंत्रण संम्बंधी चिंता और गहराई है जिसे सम्बंधित व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा सरकार तक पहुंचाया जाता रहा है। इस सब के बावजूद सरकारी स्तर पर जनसंख्या नियत्रण सम्बंधी कोई व्यस्थित कार्यक्रम लागू न किए जाने पर हैरानी होती है।

जनसंख्या नीति में यह भी कहा गया है कि जनसंख्या स्थिरीकरण का लक्ष्य तभी प्राप्त किया जा सकता है जब बाल उत्तरजीविता, मातृ स्वास्थ्य और गर्भ निरोधक मामलों पर लगातार एवं प्रभावी ढंग से ध्यान दिया जाए। तथापि जनसंख्या की वृद्धि को नियंत्रित रखने में वास्तविकता सफलता अन्य बातों के साथ–साथ समुदायों के नेताओं द्वारा सार्वजनिकतौर से समर्थन दिए जाने, परिवार कल्याण कार्यक्रमों के लिए उपलब्ध संसाधनों, नागरिकों को सेवाओं की कारगर सुपुर्दगी सुनिश्चित करने के लिए राज्य स्वास्थ्य प्रणाली में कार्य–कुशलता और जवाबदेही लाने के साथ–साथ महिला शिक्षा और परिवार में उनकी हैसियत पर निर्भर करेंगी। ये सभी निविष्टयाँ अभी तक परिवार कल्याण कार्यक्रम के लिए अपेक्षित मात्रा में एक समान रूप से उपलब्ध नहीं रही हैं। जिसके कारण इससे इष्टतम और बेहतर लाभ प्राप्त नहीं हो पा रहें थें।

इस प्रकार जनसंख्या नीति में जो प्रोत्साहक उपाय दिए गए हैं वे कमजोर तो है हीं साथ ही उनमें किसी तरह के दण्डात्मक या निरोधक उपायों की चर्चा भी नहीं की गयी है। इससे प्रतीत होता है कि सरकार जनसंख्या नियंत्रण के मसले को आज भी गंभीरता से नहीं ले पा रही है और अगर ले रही है तो वास्तविक, व्यवहारिक और ठोस उपाय लागू करने में स्वंय को लाचार पा रही है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अगर जनसंख्या वृद्धि दर को स्थिर नहीं बनाया गया अैर सरकार तथा मशीनरी का

रवैया जैसा है, वैसा ही बना रहा, तो शीघ्र ही स्थिति हाथ से बाहर होने लगेगी। बेहतर है ऐसी स्थिति न आने दी जाय और जनसंख्या नीति पर सारे व्यावहारिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए एक बार फिर से विचार किया जाय। जनसंख्या वृद्धि दर को स्थिर बनाने के लिए रचनात्मक अभियान भी एक कड़ी है। इस अभियान के अन्तर्गत सामाजिक–आर्थिक सुरक्षा की गारंटी, बेहतर लोकतंत्र और उसे त्वरित करने के लिए विवके सम्मत कानून आते हैं।

भारत जैसे पिछड़े देश में जनसंख्या सिर्फ इसलिए समस्या नहीं है कि यहां एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र के निवासियों की संख्या अधिक है, बल्कि यह इस कारण भी विकराल नजर आती है क्योंकि उनमें से अधिकांश अति अमानवीय परिस्थितियों में जीने को मजबूर हैं। इस दृष्टि से भारत में जनसंख्या नियंत्रण के लिए दो स्तर पर प्रयास जरूरी है। एक तो परिवार नियंत्रण कार्यक्रमों द्वारा लोगों की बढ़ती संख्या पर रोक लगाना तथा दूसरा सामाजिक–आर्थिक प्रयासों द्वारा लोगों को बेहतर जीवन प्रदान करने के उपाय करना। देश के अधिकांश समाजशास्त्री दोनों को एक–दूसरे के पूरक मानते हैं। इसलिए दोनों में से किसी एक को कम करके दूसरे को चिरस्थायी नहीं बनाया जा सकता।

स्माज में बुद्धिजीवियों के अत्यल्प हिस्से को छोड़ दिया जाय तो आमतौर पर यही धारणा दिखायी देती है कि इतनी बढ़ी जनसंख्या पर लगाम लगाने के लिए तानाशाही तरीके अपनाने की जरूरत है। लोकतांत्रिक तरीके से इसका समाधान सम्भव नहीं। कबीलाई समाजों के लिए या जिन्होंने लोकतंत्र का स्वाद नहीं चखा हो, उन समाजों के लिए कुछ हद तक यह बात सही हो सकती है। लेकिन जिन लोगों ने सीमित स्तर पर ही सही शासन–प्रशान में अपनी भागीदारी देनी शुरू कर दी हो, उसमें पूरी व्यवस्था को तानाशाही की दिशा में धकेलना कहीं से भी जायज और विवके सम्मत नहीं कहा जा सकता। साथ ही अगर गंभीरता से परिस्थितियों का विश्लेषण किया जाय तो सच यह भी हैं कि लोग तानाशाही तरीकों की वकालत इसलिए करते हें कि उन्हें लोकतंत्र के लाभ नहीं मिलते। ढांचा भले ही लोकतात्रित बना रहता हो लेकिन जनता अपने हक तथा अधिकारों के लिए चंद अफसरों तथा नेताओं पर आश्रित रहती है। इसलिए होता यह है कि लोकतंत्र के तहत भी उन्हें सामाजिक–आर्थिक सुरक्षा नहीं मिल पाती। ऐसी स्थिति में सरकार को भले ही बढ़ती जनसंख्या एक समस्या के रूप में दिखायी देती हो, कई अन्य समस्याओं से घिरी आम जनता में उसके प्रति कोई संवेदनशीलता नहीं होती मतलब यह कि लोकतंत्र अगर अंतिम आदमी तक पहुंचेगा तो जनता भी देश की व्यापक समस्याओं से खुद–ब–खुद जुड़ेगी, व्यवस्था के प्रति उसमें प्रेम पैदा होगा और सरकार की समस्याओं को हल करने का रास्ता वह भी खोजेगी। आज जनसंख्या अगर सिर्फ सरकार की समरूा बनी हुई है तो मात्र इसलिए कि जनता और सरकार के बीच कोई जीवंत साझेदारी और संवाद नहीं है। सभी को सामाजिक–आर्थिक सुरक्षा की गारंटी देकर ही इस काम को किया जा सकता है और इसके बदौलत जनसंख्या–स्थिरीकरण जैसे वृहद् कार्यक्रम को भी अंजाम दिया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1 जैकोबसैन जे– प्रमोटिंग पॉपुलेशन स्टेबलाइजेशन इनसेन्टीफोर स्मार्ट फेमिली
2 महाजनी यू.– रोल ऑफ इंडियन माइनोरिटीज
3 सिंह ए., ओगोलाह आर, राम एफ.– स्टेरीलाइजेशन रिग्रेट एमंग मैरिड वोमेन इन इंडियाः इम्पिलिकेशन फोर द इंडियन फैमिली प्लानिंग प्रोग्राम
4 टाइम्स ऑफ इंडिया– जनवरी 12, 2011–इंडिया टू मिस 2045 पोपूलेशन टारगेट
5 द हिन्दु– पोपूलेशन स्टेबलाइजेशन टारगेट डेट पुस्ड बैक 2070
6 नडडा जे पी.– माईक्रो प्लानिंग निडेड फोर पोपुलेशन स्टेबलाईजेशन
7 पाण्डेय कृष्णा– पोपुलेशन स्टेबलाईजेशन–इंडियाज क्रिटिकल नीड
8 जोशी अतुल– निबन्ध–पोपुलेशन स्टेबलाईजेशन इन इंडियाज बीगेस्ट चैलेन्ज, जुलाई 23, 2005
9 द पाईनियर– इंडिया बिगन्स पोपुलेशन स्टेबलाईजेशन, अप्रैल 29, 2015